अध्याय - तीसरा

रांगेय राघव का प्रिय कहानी-साहित्य।

अ ध्या य - ती स रा

-: रांगेय राघव का प्रिय कहानी- साहित्य। :-

१] भूमिका :-

डॉ॰ रांगेय राघव का साहित्य लेखन के कार्य में मौलिक स्थान है। वे प्रधान रूप से उपन्यास के बारे में प्रसिध्द हैं। कहानी-साहित्य के रूप में वे अधिक मशहूर नहीं हुए। फिर भी कहानी- साहित्य में अपने समकालीन अन्य लेखकों की तुलना में किसी से पीछे नहीं रहे। डॉ॰ रांगेय राघवने कहानी - साहित्य के सीवाय अन्य विधाओं में भी शब्दलेखन किया है। वे कहानी - साहित्य लेखन में समय के प्रति अधिक सावधान रहे हैं। लेखक ने अपने कहानी - साहित्य को सुन्दर रूप से सजाया है, जैसे " मेरी प्रिय कहानियाँ " शीर्षक नाम की संकलित कहानियाँ हैं।

२] प्रिय कहानी - संग्रह तथा कहानियों का विवरण :-

डॉ॰ रांगेय राघवने अनेक विधाओं का ब्योरा दिया है। उन्होंने कहानी- साहित्य भी लिखा है। डॉ॰ रांगेय राघवने स्वयं की कहानियों के सम्बध में लिखा है - " अधिक कहानियाँ नहीं लिखी हैं - शायद सन १९३६ से १९५८ तक यानी २२ साल में लिखी हैं अस्सी या पच्चासी।" [१] लेखकाने " किशोरावस्था से लेखनारंभ [२] किया था। " सन १९३६ में रांगेय राघव की आयु कुल १३ वर्ष थी॰ इस कच्ची उम्र में उन्होंने कौन - सी क कहानियाँ लिखी, हम निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते। संभव है उनमे से कुछ नष्ट हो गयी हो अथवा बाद के वर्षों में छपाते समय उन्हें फिर से लिखा गया हो। हमें चूंकि उनकी १९४४ से प्रकाशित कोई कहानी नहीं मिली, अत: निश्चित जानकारी के अभाव में दिसम्बर १९४४ में प्रकाशित अभिमान से यहाँ कहानियों का क्रमारंभ किया हैं। [३]

डॉ॰ रांगेय राघवने भिन्न - भिन्न प्रकार की लगभग अस्सी या पच्यासी कहानियाँ लिखी हैं। उनका प्रिय कहानी - साहित्य स्वंतत्र

कहानियाँ लिखकर नहीं छपा है। डॉ. रांगेय राघवने अपनी ही कहानियों में से अंत्यत महत्वपूर्ण नौ कहानियों को चुनकर प्रस्तुत कहानी संग्रह तैयार किया है। उनका " मेरी प्रिय कहानियाँ " संकलन उनके मरणोपरान्त सन १९७० में छपा है। इस प्रकार रांगेय राघव द्वारा लिखित कुल ग्यारह कहानी संग्रह हैं। इस लघु प्रबन्ध में प्रिय कहानी - साहित्य का प्रकाशन संस्था का नाम, वर्ष और उनके संग्रहित कहानियों का क्रम से वर्णन दिया जा जा रहा है। विवरण इस प्रकार है -

१] मेरी प्रिय कहानियाँ - रांगेय राघव :-

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली.

प्रकाशक - राजपाल एण्ड सन्स,
कश्मीरी गेट, दिल्ली.

मुद्रक - भारत मुद्रणालय, शाहदरा, दिल्ली

तीसरा संस्करण - १९७६

प्रथम संस्करण - १९७०

१] कुत्ते की दुम और शैतान : नये टेकनीक्स
२] पंच परमेश्वर
३] प्रवासी
४] घिसटता कम्बल
५] गुंगे
६] धर्म - संकट
७] फूल का जीवन
८] नई जिन्दगी के लिए
९] गदल

अन्य शेष कहानी संग्रह भी इस लघुप्रबन्ध के बारे में सम्बन्धित होने के कारण अधिक जानकारी के लिए, उनका शीर्षक, प्रकाशन संस्था का नाम , वर्ष और हर कहानी संग्रह की कुल संख्या उपलब्ध सामग्री के

आधार पर दे रहा हूँ। उनका विवरण इसप्रकार है -

२] साम्राज्य का वैभव :

सरस्वती प्रेस, बनारस,
प्रथम संस्करण, मई १९७० ई
कुल संख्या - पाँच।

३] समुद्र के फेन :

जानकारी अनुपलब्ध
कुल संख्या - चौंदह ।

४] देवदासी :

जानकारी अनुपलब्ध
कुल संख्या - छ : ।

५] जीवन के दाने :

नवयुग साहित्य सदन,
खजूरी बाग, इन्दौर ,
प्रथम संस्करण मार्च १९४९
कुल संख्या - छ : ।

६] अधूरी मूरत :

सुलभ प्रकाशन मंडल, इन्दौर,
प्रथम संस्करण, १९४९
कुल संख्या - पाँच।

७] अंगारे न बुझे :

किताब महल, इलाहाबाद,
बम्बई। प्रथम संस्करण, १९५१
कुल संख्या - बीस।

८] ऐयाश मुर्दे :

जानकारी अनुपलब्ध

कुल संख्या सत्रह।

९] इन्सान पैदा हुआ :

किताब महल, इलाहाबाद,
संस्करण, १९५७,
कुल संख्या - इक्कीस।

१०] पाँच गधे :

राजपाल एण्ड सन्स,
कश्मिरी गेट, दिल्ली - ६
संस्करण, १९६०,
कुल संख्या - नौ।

११] एक छोड एक :

आत्माराम एण्ड सन्स,
कश्मिरी गेट, दिल्ली -६
प्रथम संस्करण , १९६३,
कुल संख्या - बारह।

उपरोक्त संकलन का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि ८ कहानियों की पुनरावृति हो गई है। इन सब का विवरण इस प्रकार है -

क्रम	कहानीका शीर्षक	कहानी - संग्रह
१]	नरक	१] देवदासी
		२] ऐयाश मुर्दे
२]	घिसटता कम्बल	१] समुद्र के फेन
		२] मेरी प्रिय कहानियाँ
३]	साँझ के शिकारी	१] ऐयाश मुर्दे
		२] जीवन के दाने

४]	नारी का विक्षोभ	१]	ऐयाश मुर्दे
		२]	जीवन के दाने
५]	पंचपरमेश्वर	१]	अधूरी मूरत
		२]	मेरी प्रिय कहानियाँ
६]	प्रवासी	१]	अधूरी मुरत
		२]	मेरी प्रिय कहानियाँ.
७]	मृग - तृष्णा	१]	अधूरी मुरत
		२]	पाँच गधे
८]	कुत्ते की दुम और शैतान	१]	पाँच गधे
		२]	मेरी प्रिय कहानियाँ [४]

अब उपरोक्त अडचनें समाप्त हो चुकी हैं। कारण कि लेखक के प्रिय कहानी - साहित्य का अध्ययन करना सरल हो चुका है। सरल इस प्रकार की " रांगेय राधव की सम्पूर्ण कहानियाँ पहला भाग और दूसरा भाग" में. संकलित उपलब्ध हैं। संग्रहित कहानी- साहित्य में लेखक के प्रिय कहानी - साहित्य में लेखक के प्रिय कहानी - साहित्य को दर्शन होते है। अधिक सुविधा के लिए उनको " मेरी प्रिय कहानियाँ " स्वच्छन्द रूप से संग्रहित की गयी हैं।

डॉ. रांगेय राधव का प्रिय कहानी- साहित्य में लेखक ने विशेष कारण को लेकर लिखी हुयी ६ नौ कहानियाँ हैं। लेखकने अपने कहानी साहित्य के बारे में स्वयं का कथन दिया है कि - " कहानी लिखने के पहले सदैव यही सोचता हूँ कि लिखने के लिए कभी न लिखूं, लिखूं किसी एक विशेष कारण को लेकर। " इस प्रकार प्रिय कहानी - साहित्य में संकलित की हुयी सभी कहानियाँ सम्पूर्ण मानव को स्विकार करती है। यहाँ प्रत्येक मानव की जीवन की समस्याओं का सत्यदर्शन होता है। मन की तडपन और व्यथा-कथा का ब्योरा है इन कहानियों में।

३] प्रिय कहानी लेखन के संबध में दृष्टिकोण :-

प्रिय कहानी लेखन के सम्बन्ध में लेखक रांगेय राधव का दृष्टि कोण बडा व्यापक और विस्तृत है। उन्होंने प्रिय कहानी - साहित्य लिखते समय किसी विशेष कारण तथा उद्देश्य को सामने रखकर लिखा है। उनके हर प्रिय कहानी में जबरदस्त विविधता दिखाई देती है। रांगेय राधव के उपन्यासों की तरह उनकी कहानियों और उनके पात्रों के वैविध्य के बारे में किसी सम्पादकने कहा है - " उनकी कहानियों के पात्रों की बस्ती पर जब हमने नजर दौडाते हैं तो जान पडता है वह एक लघु-भारत है। किस वर्ग और वर्ण का व्यक्ति वहाँ नही है ? इससे भी महत्त्वपूर्ण यह कि प्राय: हर पात्र का अपना व्यक्तित्व है, वे अपने वर्ग या वर्ण के आर्कीटाइप कठपुतले मात्र वही है। [६] लेखके ने प्रिय कहानी के प्रत्येक पात्र और क्षेत्र को देखने और परखने तथा समझने का प्रयास किया है। इसके सम्बन्ध में स्वयं लेखक का कर्थन है, कि....." मेरा मत यह है कि पात्र जब सामने आये तो ऐसा लगना चाहिए जैसे जिन्दगी में एक नये आदमी से मुलाकात होगई, उसे किस नजर से आप देखना चाहते हैं ? मैं तो सम्पूर्ण मानव को देखना ही कला के दृष्टिकोण से ठीक समझता हूँ। " [७] उनके इस प्रवृत्ति के सम्बन्ध में डॉ. पद्मसिंह शर्मा " कमलेश " ने विशेष जानकारी दी है। वह यह है कि, ..." वे [रांगेय राधव] जीवन और जगत को स्वंय भी देखने के आदी थे। ..... उन्होंने ..... जन साधारण का लेखक बनने का व्रत लिया था। ..... बहुत कम लोगों को ज्ञात: होगा कि, रांगेय राधव जेठ की तपती दुपहरी में गरीब मजदूरों की बस्तीयों में चक्कर लगाते थे जिस कष्टो का अनुभव स्वयं कर सके। उनकी निश्चित मान्यता थी कि ऐसे प्रत्यक्ष सम्पर्क के बिना जनवादी लेखक नहीं बन कसता।" [८]

लेखक के मस्तिष्क में आदर्श समाज तथा व्यक्ति का चित्र होने के कारण इस चित्र का लेखन करना उनकी प्रिय कहानियाँ का अयोजन है। लेखक सम्पूर्ण मानव समाज को कलात्मक दृष्टिकोन से देखकर प्रिय कहानी के माध्यम से उसे प्रकट करना चाहतेहै। विविधता दिखाना है वास्तव में उनकी प्रिय कहानी- साहित्य जीवन की विविधता दिखाता है।

४] प्रिय कहानियों के वर्गीकरण का आधार :-

डॉ. रांगेय राघव प्रतिभा संम्पन्न लेखक हैं। उनकी पहली प्रिय कहानी नये टेकनीक्स से लिखी गई हैं। उनकी सारी प्रिय कहानियों में उनके आसपास का परिचित समाज साकार हुआ है। उनकी प्रिय कहानियों में मानवीयता का व्यापक रूप है। क्योंकि प्रिय कहानियों को साकार करते हुए लेखकने नये टेकनीक्स, शहरी जीवन, ग्रामजीवन, धार्मिक जीवन, मध्यवर्ग, हृदय की पीडा, धर्म संकट एक त्रिकोण, जीवन का कठोर सत्य, विषमता और अत्याचार - दलित समस्या, आर्थिक पक्ष और सामाजिक पक्ष को जनता के सामने रखा है। लेखक ने अपना व्यापक - विस्तृत दृष्टिकोण सामने रखकर व्यक्ति से लेकर राष्ट्र तक के सत्य का उद्घाटन किया है। लेखकने प्रेमचंद की परम्परा को आगे बढानेवाले विचार अपने प्रिय कहानी में व्यक्त किये हैं। उनका कहना है " जिन आदमियों की राय को मैं इमानदार मानता हूँ और जिनकी कद्र करता हूँ, उनमे श्री यशपाल थे। परन्तु फिर इस का नाम लुप्त हो गया और कहा गया कि प्रेमचन्द के बाद ऐसी समस्यों पर लिखा ही नही गया। " [९] लेखक की भाषा - शैली और व्यापक - विस्तृत दृष्टिकोण को देखकर ऐसा लगाता है कि, वे प्रेमचंद का अनुसरण कर रहें हैं। जैसा कि यह " विशिष्टता भी उन्हे प्रेमचंद के बाद के सर्वाधिक महत्व के लेखकों की पांत में रखे जाने के लिए पर्याप्त है। " [१०] लेखक के प्रिय कहानी - साहित्य के सम्बन्ध में इस सजगता का बोध होता है। इसप्रकार डॉ. रांगेय राघव के प्रिय कहानी साहित्य का वर्गीकरण नीचे पेश किया जा रहा है -

५] प्रिय कहानियों का वर्गीकरण :-

डॉ. रांगेय राघव की प्रिय कहानियो के आधार पर यहाँ हम उसे अध्ययन की सुविधा हेतू तीन भागों में वर्गीकृत करते हैं। जैसे

१] सामाजिक कहानियाँ

२] ऐतिहासिक कहानियाँ

३] मनोवैज्ञानिक कहानियाँ

लेखकने अपनी प्रिय कहानियों में भिन्न - भिन्न प्रकार की समस्याओं को शब्दांकित किया है। वे समस्याएँ हृदय को छूनेवाली है, क्योंकि लेखकने प्रिय कहानी - साहित्य लिखते समय मानव समुदाय और परिचित आस - पास का लेखन किया हैं।

१] सामाजिक कहानियाँ :-

उनकी प्रिय सामाजिक कहानियों में सत्य के दर्शन कराने की कोशिश की गयी है। डॉ. रांगेय राघव की कहानियोंमें अधिकांश समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। प्रिय सामाजिक कहानियाँ में उन्होने अपनी पहली प्रिय कहानी में चंचल और सुषमा ये दो पात्र रखकर कहा है कि, " इसमें पात्र कहीं आते नाहीं, समाज के प्रतिनिधीयों की कलम बोलती है। "[११] हां, चरित्र की विशेषता मात्र दिखाई देती है और उसके साथ - साथ यथार्थ का सत्य [कुत्ते की दुम और शैतान : नये टेकनीक्स], यह उनकी समूच ही अद्भुत और वर्ग - विषमतापूर्ण कहानी वैविध्यता का रुप है [पंच परमेश्वर] एक आदमी जब दूस्सरे आदमी की सांत्वना करता है तब उसे आधार मिलता हैं। यह निम्नमध्य वर्ग के जीवन की विवशता की घुमडन [घिसटता कम्बल] है, जब आर्थिक और दरिद्र का भेद व्यक्तियों को संस्कृति के दो किनारे पर रखता है, तब विषमता और अत्याचार आकार उस दलित के लिए, कि जिस दलित की मृत्यु एक नये जीवन को लाने के लिए चुनौती देती है [फूल का जीवन], लेखकने पुरुष और स्त्री की सामाजिक परतंत्रता का द्वंद और दहेज प्रथा की समस्या तथा बच्ची और बच्चे का भेद दिखाया है [नई जिंदगी के लिए], रांगेय राघव की प्रिय कहानी में ग्रामजीवन का चित्र और गुजरों के समाज की रीतियों तथा पुलिस के साथ संघर्ष करते - करते गदल की मृत्यू का प्रभावशाली चित्रण है।

इस प्रकार डॉ. रांगेय राघव के प्रिय सामाजिक कहानी-साहित्य में प्रवृतियों की झलक देखने को मिलती है। उन्होंने अपनी प्रिय सामाजिक कहानियाँ व्यापक उद्देश को सामने रखकर लिखी है।

२] ऐतिहासिक कहानियाँ :-

सामाजिक प्रिय कहानियों के समान उनकी ऐतिहासीक कहानियों में भी प्रेम- कथा है। उत्तर और दक्षिण के धार्मिक जीवन भी प्रकट हुआ है। लेखकने इसमें मानव का हृदय खोलकर उसके दर्शन कराये है [प्रवासी], डॉ. रांगेय राधव की और एक प्रिय ऐतिहासिक कहानी है, जिसमें बाप और बेटे के बीच एक स्त्री है। बाप- बेटा क्रमश : शराब - भांग का नशा करते है। इनके बीच वह स्त्री हैकि जो एक मर्यादा है, और धर्म संकट एक त्रिकोण है [धर्म-संकट] इस प्रकार इस दृष्टिकोण से " धर्म संकट " का अपना महत्व प्रकट हुआ है।

३] मनोवैज्ञानिक कहानियाँ - अन्य रचनाकारों के समान डॉ. रांगेय राधवने भी कुछ मनोवैज्ञानिक साहित्य- सृजन किया है। अपनी मनोवैज्ञानिक कहानी [गूंगे] में उन्होंने सम्पूर्ण व्यक्ति से लेकर राष्ट्र तक की मानसिक समस्याओं के दर्शन कराके चेतना जगाने का प्रयास किया है। गूंगे में ऐसी पिडन है कि जो सर्वत्र दिखाई देती हैं।

६] प्रिय कहानियों के शीर्षकों का मीमांसा :-

मेरी राय के अनुसार प्रिय कहानी - साहित्य का सम्बन्ध शीर्षक के साथ जुडा रहता है। कोई शीर्षक प्रधान प्रधान घटना को मौलिक मानकर विषय के साथ - साथ जोड दिया जाता है। शीर्षक पढते ही साहित्य सृजन का महत्व मालूम हो जाता है। समस्या और आस- पास का परिवेश, रहन - सहन , रीतियाँ, मूलभाव और विचार , विषय और उद्देश्यआदि के आधार पर साहित्य - रचना का शीर्षक निश्चित किया जाता है। ऐसे अधिकांश मामालों को ध्यान में रखते हुए डॉ. रांगेय राधव के प्रिय कहानी- साहित्य शीर्षकों पर विचार किया जा सकता है।

डॉ. रांगेय राधव की प्रिय कहानियों के कुछ शीर्षक इतने संक्षिप्त हैं कि , सीर्फ एक शब्द ,जैसे, "प्रवासी ", "गूंगे, " गदल।

कुछ प्रिय कहानियों के शीर्षक उपर्युक्त शीर्षकों की तुलना में कुछ लम्बे है। जैसे - कुत्ते की दुम और शैतान : नये टेकनीक्स, " पंच परमेश्वर"

" घिसटता कम्बल, " धर्म-संकट, " फुल का जीवन, " नई जिंदगी के लिए।

लेखक डॉ. रांगेय राधव की प्रि य सामाजिक कहानियों के शीर्षक समाज में प्रचलित कुप्रथाओं की ओर निर्देशन करते हैं। उनकी श्रेष्ठ कहानियों के सामाजिक शीर्षक इसप्रकार हैं - "कुत्ते की दुम और शैतान " नये टेक्नीक्स, " " पंच परमेश्वर, " घिसटता कम्बल, " फूल का जीवन, " " नई जिन्दगी के लिए " और " गदल " हैं।

डॉ. रांगेय राधव की प्रिय ऐतिहासिक घटना को प्रस्तुत करते हैं। कुछ ऐतिहासिक कहानियों के शीर्षक ऐसे है -"प्रवासी " "धर्म संकट "।

डॉ. रांगेय राधव की मनोवैज्ञानिक प्रिय कहानियाँ आदमी की मानसिक व्यथा का बोध कराती हैं। जैसे - " गूंगे " आदि कहानी शीर्षकों में देख सकते है। इसप्रकार इनका प्रिय कहानी- संकलन देखते ही कहानियाँ पढने की इच्छा अध्येता के मन में सजग होती है। क्योंकि लेखक की प्रिय कहानियाँ प्रिय ही लगती हैं। इसका कारण यह हैं कि लेखक का विस्तृत अध्ययन और व्यापक दृष्टिकोण तथा किसी एक विशेष कारण को प्रस्तुत करनेवाली उनकी अपनी कलम भी ।

// नि ष्क र्ष //
==========

इस अध्याय में डॉ. रांगेय राधव के प्रिय कहानी-साहित्य का विशेष महत्व पेश करने का प्रयास किया गया हैं। उनके प्रिय -साहित्य का बोध कराते समय प्रिय कहानी संग्रह तथा कहानियों का संक्षेप में विवरण लेखक का लेखन के संबध में दृष्टिकोण पाठकों के सामने रखने का हेतू है।

प्रिय कहानियों के वर्गीकरण का आधार तथा उनका वर्गीकरण १] सामाजिक कहानियाँ २] ऐतिहासिक कहानियाँ और ३] मनोवैज्ञानिक कहानियाँ आदि में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। अर्थात इसमें मानव विषमत के चित्र चित्रित किये गये हैं।

साथ ही पाठकों के सुविधा के लिए प्रिय कहानियों के शीर्षको की मीमांसा करने की कोशिश की गयी है। इसमें लेखक का हेतु यह है कि सम्पूर्ण मानव के विविध समस्याओं का आकलन उनकी प्रिय कहानियों से हो सके।

xxxxxxxxxxxxxxxxx
xxxxxxx

// अ ध्या य - ती स रा //

-: संन्दर्भ - सूची :-

क्रम	ग्रन्थ का नाम और पृष्ठ क्रमांक :
१]	मेरी प्रिय कहानियाँ- रांगेय राघव - दो शब्द से प्राप्त पृ. ६
२]	रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ, पहला भाग - " रांगेय राघव " शीर्षक से प्राप्त।
३]	वही, " सम्पादकीय " शीर्षक से प्राप्त ।
४]	कथाकार रांगेय राघव - डॉ. कमलाकर गंगावणे, पृ. २०७
५]	मेरी प्रिय कहानियाँ - रांगेय राघव - " धर्म संकट " शीर्षक में पृ. ९२.
६]	रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ, पहला भाग - " सम्पादकीय " शीर्षक से प्राप्त।
७]	मेरी प्रिय कहानियाँ - रांगेय राघव - लेखक के वक्तव्य से प्राप्त।
८]	डॉ. पद्मसिंह शर्मा " कमलेश " आलोचना २४ जुलाई ६५, पृ. १५८ से कथाकार रांगेय राघव - डॉ.कमलाकर गंगावणेजी को प्राप्त, पृष्ठ २०८.
९]	मेरी प्रिय कहानियाँ - शीर्षक " पंच परमेश्वर " के डॉ. रांगेय राघव के " इस कहानी के सम्बन्ध में " इस वक्तव्य से प्राप्त पृ. २८.
१०]	रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ, पहला भाग - " सम्पादकीय" शीर्षक से प्राप्त।

११] मेरी प्रिय कहानियाँ - " नये टेकनीक्स " - रांगेय राघव लेखक के - " इस कहानी के सम्बध में " से प्राप्त. ।

**********-